

संस्कृत संज्ञा

स्तोत्र-भाष्येक



विष्णुसहस्रनाम

६९८/स्तो. ३६९

①

॥ श्री मोरया अथ विष्णु महात्मना मावळी प्रारंभः ॥



(2)

वि०
१

श्री गणेशाय नमः॥ ॐ शंताकारं भुजगं॥
ॐ विश्वस्मे नमः॥ ॐ विष्णवे न॥ ॐ वषट्का
राय॥ ॐ भूतभव्यभवत्प्रभवे॥ ॐ भूतकृते॥
ॐ भूतभूते॥ ॐ भावाय न॥ ॐ भूतात्मने॥
ॐ भूतभावनाय॥ ॐ पूतात्मने॥ ॐ परमात्म
ने॥ ॐ मुक्तानां परमायै गतये॥ ॐ अव्ययाय॥
ॐ पुरुषाय॥ ॐ साक्षिणे॥ ॐ क्षेत्रज्ञाय॥ ॐ
अक्षराय॥ ॐ योगाय॥ ॐ योगविदाने त्रे॥ ॐ
प्रधानपुरुषेश्वराय॥ ॐ नारसिंहवपुषे॥ ॐ

१

(2A)

श्रीमते०॥ॐ केशवाय०॥ॐ पुरुषोत्तमाय०॥ॐ
सर्वस्मे०॥ॐ शर्वाय०॥ॐ शिवाय०॥ॐ स्थाणवे०॥
ॐ भूतादये०॥ॐ अव्ययाय निचये०॥ॐ संभवा
य०॥ॐ भावनाय०॥ॐ भर्त्रे०॥ॐ प्रभवाय०॥ॐ प्र
भवे०॥ॐ ईश्वराय०॥ॐ स्वयंभुवे०॥ॐ शंभवे०॥
ॐ आदित्याय०॥ॐ पुष्कराक्षाय०॥ॐ महास्वन
याय०॥ॐ अनादिनिधनाय०॥ॐ धात्रे०॥ॐ विधा
त्रे०॥ॐ धातुरुत्तमाय०॥ॐ अप्रमेयाय०॥ॐ हृषी
केशाय०॥ॐ पद्मनाभाय०॥ॐ अमरप्रभवे०॥ॐ

(3)

वि०
२

विश्वकर्मणे॥ॐ मनवे॥ॐ त्वष्ट्रे न॥ॐ स्रवि
ष्टाय॥ॐ स्रविराय ध्रुवाय॥ॐ अग्रास्याय॥ॐ
शाश्वताय॥ॐ कृष्णाय॥ॐ लोहिताक्षाय॥ॐ
प्रतर्दनाय॥ॐ प्रभृताय॥ॐ त्रिककुप्याम्ने॥
ॐ पवित्राय॥ॐ परस्मै मंगलाय॥ॐ ईशानाय॥
ॐ प्राणदाय॥ॐ प्राणाय॥ॐ ज्येष्ठाय॥ॐ श्रे
ष्ठाय॥ॐ प्रजापतये॥ॐ हिरण्यगर्भाय॥ॐ भू
गर्भाय॥ॐ माधवाय॥ॐ मधुसूदनाय॥ॐ ई
श्वराय॥ॐ विक्रमिणे॥ॐ चन्विने॥ॐ मेधा

२

(3A)

विने॥ॐ विक्रमाय॥ॐ क्रमाय॥ॐ अनुत्तमा
य॥ॐ दुराधर्षाय॥ॐ कृतज्ञाय॥ॐ कृतये॥
ॐ आत्मवते॥ॐ सुरेशाय॥ॐ शरणाय॥ॐ
शर्मणे॥ॐ विश्वरेतसे॥ॐ प्रजाभवाय॥ॐ
अङ्गेन॥ॐ संवत्सराय॥ॐ व्यालाय॥ॐ प्रत्य
याय॥ॐ सर्वदर्शनाय॥ॐ अजाय॥ॐ सर्वेश्व
राय॥ॐ सिद्धाय॥ॐ सिद्धये॥ॐ सर्वादये॥
ॐ अमृताय॥॥१००॥ॐ वषाकपये॥ॐ अमे
यात्मने॥ॐ सर्वयोगविनिस्ताय॥ॐ वसवे॥

(५)

वि०
३

ॐ वसुमनसे॥ ॐ सत्याय॥ ॐ समात्मने॥
ॐ संमिताय॥ ॐ समाय॥ ॐ अमोघाय॥ ॐ
पुंडरीकाक्षाय॥ ॐ वषट्कर्मणे॥ ॐ वषाकृत
ये॥ ॐ रुद्राय॥ ॐ बहुशिरसे॥ ॐ बभ्रवेन॥
ॐ विश्वयोनये॥ ॐ शुचिश्रवसे॥ ॐ अमृता
य॥ ॐ त्राम्बतस्थानवे॥ ॐ वरारोहाय॥ ॐ मा
हातपसे॥ ॐ सर्वगाय॥ ॐ सर्वविद्भानवे॥
ॐ विश्वकुसेनाय॥ ॐ जनार्दनाय॥ ॐ वेदाय॥
ॐ वेदविदे॥ ॐ अव्यंगाय॥ ॐ वेदांगाय॥ ॐ वे

(4A)

दविदे॥ॐ कवये॥ॐ लोकाध्यसाय॥ॐ सुरा
ध्यसाय॥ॐ धर्माध्यसाय॥ॐ कृताकृताय॥
ॐ चतुरात्मने॥ॐ चतुर्व्यूहाय॥ॐ चतुर्दंष्ट्राय॥
ॐ चतुर्भुजाय॥ॐ भ्राजिष्ठवे॥ॐ भोजनाय॥
ॐ भोक्त्रेन॥ॐ सहिष्ठवे॥ॐ जगदादिजाय॥
ॐ अनघाय॥ॐ विजयाय॥ॐ जेत्रेन॥ॐ वि
श्वयोनये॥ॐ पुनर्वसवे॥ॐ उपेंद्राय॥ॐ वाम
नाय॥ॐ प्रांशवे॥ॐ अमोघाय॥ॐ शुचये॥
ॐ उर्जिताय॥ॐ अतींद्राय॥ॐ संग्रहाय॥ॐ स

(5)

वि०
४

गीय०॥ॐ च्छतात्मने०॥ॐ नियमाय०॥ॐ यमाय०॥
ॐ वेद्याय०॥ॐ वेद्याय०॥ॐ सदायोगिने०॥ॐ बी
रघ्ने०॥ॐ माधवाय०॥ॐ मधवे०॥ॐ अतीन्द्रियाय०॥
ॐ महामायाय०॥ॐ महोत्साहाय०॥ॐ महाबला
य०॥ॐ महाबुद्धये०॥ॐ महावीर्याय०॥ॐ महाश
क्तये०॥ॐ महाद्युतये०॥ॐ अनिर्देश्यवपुषे०॥ॐ
श्रीमतये०॥ॐ अमेयात्मने०॥ॐ महाद्रिधृते०॥
ॐ महेशासाय०॥ॐ महीभर्त्रे०॥ॐ श्रीनिवासाय०॥
ॐ सतांगतये०॥ॐ अनिरुध्ताय०॥ॐ सुरानंदाय०॥ ४

(5A)

ॐ गोविंदाय॥ ॐ गोविदांपत्ये॥ ॐ मरीचये॥
ॐ दमनाय॥ ॐ हंसाय॥ ॐ सुपर्णाय॥ ॐ भु
जगोत्तमाय॥ ॐ हिरण्यनाभाय॥ ॐ सुतपसे॥
ॐ पद्मनाभाय॥ ॐ प्रजापतये॥ ॐ अमृत्यवे॥
ॐ सर्वदृशे॥ ॐ सिंहाय॥ २०॥ ॐ संध्यात्रे॥
ॐ संधिमते॥ ॐ स्थिराय॥ ॐ अजाय॥ ॐ दुर्म
र्षणाय॥ ॐ शास्त्रेण॥ ॐ विश्रुतात्मने॥ ॐ सु
रारिघ्ने॥ ॐ गुरवेन॥ ॐ गुरुत्तमाय॥ ॐ चामे
न॥ ॐ सत्याय॥ ॐ सत्यपराक्रमाय॥ ॐ निमि

(6)

वि

५

षाय॥ॐ अनिमिषाय॥ॐ स्रग्विणे॥ॐ वाच
स्पतये॥ॐ उदारधिये॥ॐ अग्रण्ये॥ॐ ग्रामण्ये॥
ॐ श्रीमते॥ॐ न्यायाय॥ॐ नेत्रेण॥ॐ समी
रणाय॥ॐ सहस्रमूर्ध्ने॥ॐ विश्वात्मने॥ॐ स
हस्राक्षाय॥ॐ सहस्रपदे॥ॐ आवर्तना॥ॐ
निवृत्तात्मने॥ॐ संवृताय॥ॐ संप्रमर्दनाय॥
ॐ अहःसंवर्तकाय॥ॐ वद्भये॥ॐ अनित्याय॥
ॐ धरणीधराय॥ॐ सुप्रसादाय॥ॐ प्रसन्ना
त्मने॥ॐ विश्वघ्ने॥ॐ विश्वभुजे॥ॐ विभवे॥ ५

(6A)

ॐ सत्कर्त्रे ॥ ॐ सत्कृताय ॥ ॐ साधवे ॥ ॐ जह
वे ॥ ॐ नारायणाय ॥ ॐ नराय ॥ ॐ असंख्येया
य ॥ ॐ अप्रमेयात्मने ॥ ॐ विशिष्टाय ॥ ॐ शि
ष्टकृते ॥ ॐ शुचये ॥ ॐ सिद्धार्थाय ॥ ॐ सिद्धसं
कल्पाय ॥ ॐ सिद्धिदाय ॥ ॐ सिद्धिसाधनाय ॥
ॐ वषाहिणे ॥ ॐ वषभाय ॥ ॐ विष्णवे ॥ ॐ व
षपर्वणे ॥ ॐ वषोदराय ॥ ॐ वर्धनाय ॥ ॐ वर्ध
मानाय ॥ ॐ विविक्ताय ॥ ॐ श्रुतिसागराय ॥ ॐ
सुभुजाय ॥ ॐ दुर्धराय ॥ ॐ वाग्मिने ॥ ॐ महेंद्रा

(क)

वि०

६

य०॥ॐ वसुदाय०॥ॐ वसवे०॥ॐ नैकरूपाय०॥ॐ
बृहद्रूपाय०॥ॐ शिपिविष्टाय०॥ॐ प्रकाशनाय०॥
ॐ ओजस्तेजोद्युतिधराय०॥ॐ प्रकाशात्मने०॥
ॐ प्रतापनाय०॥ॐ सहाय०॥ॐ स्पष्टाक्षराय०॥
ॐ मंत्राय०॥ॐ चंद्रांशवे०॥ॐ भास्करद्युतये०॥ॐ
अमतांशूद्रवाय०॥ॐ भानवे०॥ॐ शशबिंदवे०॥
ॐ सुरेश्वराय०॥ॐ औषधाय०॥ॐ जगतः सेत
वे०॥ॐ सत्यधर्मपराक्रमाय०॥ॐ भूतभव्यभव
न्नाथाय०॥ॐ पवनाय०॥ॐ पावनाय०॥ॐ अनलाय०॥६

(7A)

ॐ कामघ्ने॥ ॐ कामकृते॥ ॐ कांताय॥ ॐ का
माय॥ ॐ कामप्रदाय॥ ॐ प्रभवे॥ ॐ युगारिक्
ते॥ ३०॥ ॐ युगावर्ताय॥ ॐ नैकमायाय॥ ॐ
महाशनाय॥ ॐ अदृश्याय॥ ॐ व्यक्तरूपाय॥
ॐ सहस्रजिते॥ ॐ अनंतजिते॥ ॐ दृष्टाय॥
ॐ विशिष्टाय॥ ॐ शिष्टेष्टाय॥ ॐ शिखंडिने॥
ॐ नहुषाय॥ ॐ वृषाय॥ ॐ क्रोधघ्ने॥ ॐ क्रोध
कृत्कर्त्रे॥ ॐ विश्वबाहवे॥ ॐ महीधराय॥ ॐ अ
सुताय॥ ॐ प्रथिताय॥ ॐ प्राणाय॥ ॐ प्राणदाय॥

(8)

वि०
७

ॐ वासवानुजाय० ॥ ॐ अपानिधये० ॥ ॐ अधिष्ठा
नाय० ॥ ॐ अप्रमत्ताय० ॥ ॐ प्रतिष्ठिताय० ॥ ॐ स्कं
दाय० ॥ ॐ स्कंदधराय० ॥ ॐ धुर्याय० ॥ ॐ वरदाय० ॥
ॐ वायुवाहनाय० ॥ ॐ वासुदेवाय० ॥ ॐ बृहद्भानवे० ॥
ॐ आदिदेवाय० ॥ ॐ पुरंदराय० ॥ ॐ अशोकाय० ॥
ॐ तारणाय० ॥ ॐ ताराय० ॥ ॐ सूराय० ॥ ॐ शौर
ये० ॥ ॐ जनेश्वराय० ॥ ॐ अनुकूलाय० ॥ ॐ शता
वर्त्ताय० ॥ ॐ पद्मिने० ॥ ॐ पद्मनिभेक्षणाय० ॥ ॐ
पद्मनाभाय० ॥ ॐ अरविंदाक्षाय० ॥ ॐ पद्मगर्भाय० ॥ ७

(8A)

ॐ शरीरभूते॥ ॐ महर्घये॥ ॐ ऋद्धाय॥ ॐ व
द्वात्मने॥ ॐ महाक्षायाय॥ ॐ गरुडध्वजाय॥ ॐ
अनुलाय॥ ॐ शरभाय॥ ॐ भीमाय॥ ॐ समय
ज्ञाय॥ ॐ हविर्हरेये॥ ॐ सर्वलक्षणलक्षणयाय॥
ॐ लक्ष्मीवते॥ ॐ समितिंजयाय॥ ॐ विसराय॥
ॐ रोहिताय॥ ॐ मार्गाय॥ ॐ हेतवे॥ ॐ दामोदरा
य॥ ॐ सहाय॥ ॐ महीधराय॥ ॐ महाभागाय॥
ॐ वेगवते॥ ॐ अमिताशनाय॥ ॐ उद्भवाय॥ ॐ
सोभणाय॥ ॐ देवाय॥ ॐ श्रीगर्भाय॥ ॐ परमे

(१)

वि०

८

स्वराय०॥ अं करणाय०॥ अं कारणाय०॥ अं कर्त्रे०॥
अं विकर्त्रे०॥ अं गहनाय०॥ अं गुहाय०॥ अं व्यवसाया
य०॥ अं व्यवस्थानाय०॥ अं संस्थानाय०॥ अं स्थानदा
य०॥ अं ध्रुवाय०॥ अं परार्धये०॥ अं परमस्पृष्टाय०॥
अं तुष्टाय०॥ अं पुष्टाय०॥ अं शुभेक्षणाय०॥ अं रामा
य०॥ अं विरामाय०॥ अं विरजाय०॥ अं मार्गाय०॥ अं
नेयाय०॥ अं नयाय०॥ अं अनयाय०॥ ४००॥ अं वीरा
य०॥ अं शक्तिमतां श्रेष्ठाय०॥ अं धर्माय०॥ अं धर्म
विदुत्तमाय०॥ अं वैकुण्ठाय०॥ अं पुरुषाय०॥ अं प्राणा

८

(9A)

य०॥ अं प्राणदाय०॥ अं प्रणवाय०॥ अं पृथवे०॥ अं
हिरण्यगर्भाय०॥ अं रात्रुघ्नाय०॥ अं व्यासाय०॥ अं
वायवे०॥ अं अघोक्षजाय०॥ अं ऋतवे०॥ अं सुदर्श
नाय०॥ अं कालाय०॥ अं परमेष्ठिने०॥ अं परिग्रहा
य०॥ अं उग्राय०॥ अं संवत्सराय०॥ अं दक्षाय०॥ अं वि
श्रामाय०॥ अं विश्वदक्षिणाय०॥ अं विस्ताराय०॥
अं स्थावरस्थाणवे०॥ अं प्रमाणाय०॥ अं अव्यया
यबीजाय०॥ अं अर्थाय०॥ अं अनर्थाय०॥ अं महा
कोत्राय०॥ अं महाभोगाय०॥ अं महाधनाय०॥ अं

(10)

वि०

९

अनिर्विण्णाय०॥ अं स्तुविष्णाय०॥ अं अभुवे०॥ अं
धर्मयूपाय०॥ अं महामखाय०॥ अं नक्षत्रनेमये०॥
अं नक्षत्रिणे०॥ अं क्षमाय०॥ अं क्षामाय०॥ अं स
मीहनाय०॥ अं यज्ञाय०॥ अं ईज्याय०॥ अं महेज्या
य०॥ अं स्रतवे०॥ अं सत्राय०॥ अं सतांगतये०॥ अं
सर्वदर्शिनेन०॥ अं विमुक्तात्मने०॥ अं सर्वज्ञाय०॥
अं उत्तमायज्ञानाय०॥ अं सुव्रताय०॥ अं सुसुखा
य०॥ अं सूक्ष्माय०॥ अं सुघोषाय०॥ अं सुखदाय०॥
अं सुहृदेन०॥ अं मनोहराय०॥ अं जितक्रोधाय०॥

९

(10A)

ॐ वीरबाहवे॥ ॐ विदारणा य॥ ॐ स्वापना य॥
ॐ स्ववत्राय॥ ॐ व्यापिने॥ ॐ नैकात्मने॥ ॐ
नैककर्मकृते॥ ॐ वत्सराय॥ ॐ वत्सलाय॥ ॐ
वत्सिनेन॥ ॐ रत्नगर्भाय॥ ॐ चनेश्वराय॥ ॐ
चर्मगुप्ते॥ ॐ चर्मकृते॥ ॐ चर्मिणे॥ ॐ सते॥
ॐ असते॥ ॐ सराय॥ ॐ असराय॥ ॐ अविज्ञा
त्रे॥ ॐ सहस्रांशवे॥ ॐ विधात्रे॥ ॐ कतलक्षणा
य॥ ॐ गभस्तिनेमये॥ ॐ सत्वस्थाय॥ ॐ सिंहा
य॥ ॐ भूतमहेश्वराय॥ ॐ आदिदेवाय॥ ॐ म



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com